आओ हिंदी समास पढ़ो और समझो:

नाम: खड़िया नाविशलाई छगनलाल

रोल नं: 259 सेम-2 FY BA

विषय: हिन्दी, मेन

2020-22

द्विगु समास

1. त्रिभुवन की शान तिरंगा है।
2. पंचतंत्र की बाल-कहानियाँ लोकप्रिय है।
3. गर्मी के दिनों में दोपहर को विश्राम आवश्यक है।
4. हम चौराहे पर खड़े थे।

1. तीन रंगों का समाहार
2. पांच तत्त्वों का समाहार
3. दो पहरों का समाहार
4. चार रास्तों का समाहार

समस्त पद के पूर्व पद में संख्यावाचक विशेषण

तत्पुरुष समास

1. सैनिक देशरक्षा के लिए सीमा पर तैनात हैं।
2. मधुर आवाज ईश्वरप्रदत्त होती है।
3. गौशाला में बहुत गायें थीं।
4. हमें पराधीन नहीं होना चाहिए।

1. देश कि रक्षा
2. ईश्वर द्वारा प्रदत्त
3. गौ के लिए शाला
4. पर के अधीन

उत्तरपद प्रधान तथा पूर्वपद गौण होता है

बहुव्रीहि समास

1. उल्लू निशाचर प्राणी है।
2. बारहसिंगा जंगली प्राणी है।
3. पतझड़ में वृक्ष सूने हो जाते हैं।
4. गणेश जी को गजानन भी कहते हैं।

1. निशा में विचरण करने वाला
2. बारह सींगोंवाला
3. झड़ जाते है पत्ते जिस ऋतु में
4. हाथी जैसा मुख है जिसका

पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत

द्वंद्व समास

1. सच्चा दोस्त सुख-दुख में साथ देता है।
2. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ तन-मन होता है।
3. माँ के लिए उसका बच्चा छोटा-बड़ा नहीं होता।
4. हमें दाल-रोटी बहुत पसंद है।

1. सुख और दुख
2. तन और मन
3. छोटा और बड़ा
4. दाल और रोटी

समस्त पद में दोनों पद समान होते है

अव्ययीभाव समास

1. गांधीजी आजीवन देशसेवा में जुटे रहे।
2. बच्चे भरपेट भोजन किया।
3. सभी को यथाशक्ति कार्य करना चाहिए।
4. प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए।

1. जीवन भर
2. पेट भर
3. शक्ति के अनुसार
4. प्रत्येक दिन

पहला पद अव्यय तथा प्रधान होता

कर्मधारय समास

1. अध्यापक भोजन नहीं रखना चाहिए।
2. विद्यार्थी बच्चे को प्राणप्रिय होता है।
3. महापुरुषों की वाणी प्रेरणादायी होता है।
4. तालाब में नीलकमल खिला है।

1. आधा है जो पका
2. प्राणों के समान प्रिय
3. महान है जो पुरुष
4. नीला है जो कमल

पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य

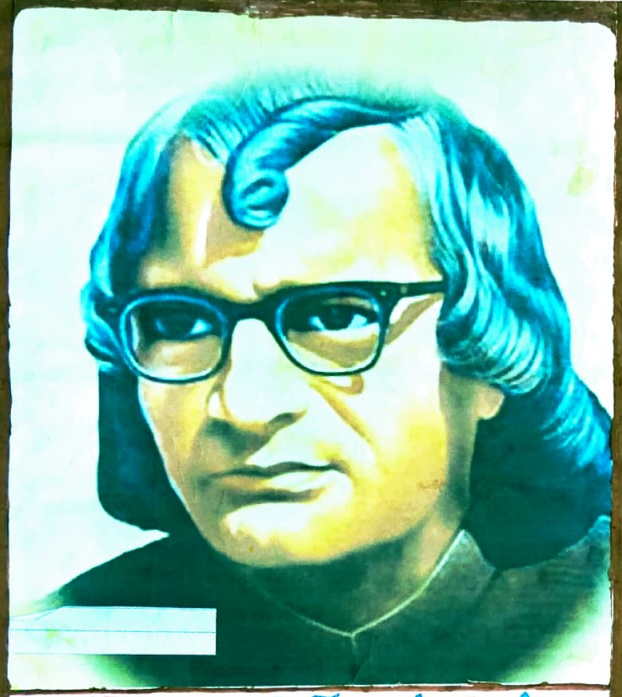

नाम :- सुमित्रानंदन पंत

नाम :- परमार रोमाबेहन गोपालभाई
मुख्य विषय :- हिन्दी
रोल नं :- 259

2020-21

सुमित्रानंदन पंत का जीवन परिचय

जन्म :-	20 मई, सन् 1900 ई.
जन्म स्थान :-	अल्मोड़ा के कौसानी ग्राम में
मृत्यु :-	28 दिसम्बर, सन् 1977 ई.
पिता का नाम :-	श्री गंगादत्त पन्त
शिक्षा :-	हिन्दी साहित्य
विषय :-	संस्कृत
रचनाएँ :-	वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, चिदम्बरा, लोकायतन, कला और बूढ़ा चाँद
पुरस्कार :-	पद्मभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार

★ **जीवन परिचय :-** सुमित्रानंदन पंत का जन्म बागेश्वर ज़िले के कौसानी गांव में 20 मई 1900 ई. को हुआ। उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। उनका नाम गोंसाई दत्त रखा गया। वह गंगादत्त पंत की आठवीं संतान थे। 1910 में शिक्षा प्राप्त करने गवर्नमेंट हाईस्कूल अल्मोड़ा गये। यहीं उन्होंने अपना नाम गोसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। 1918 में मझले भाई के साथ काशी गये और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर म्योर कालेज में पढ़ने के लिए इलाहाबाद चले गए। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बाँगला और अंग्रेजी भाषा का साहित्य अध्ययन करने लगे। इलाहाबाद में ही उनकी काव्यचेतना का विकास हुआ। कर्ज से जूझते हुए पिता का निधन हो गया। कर्ज चुकाने के लिए जमीन और घर भी बेचना पड़ा। इन्हीं परिस्थितियों में वह मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुये। 1931 में कुँवर सुरेश सिंह के साथ कालाकाँकर, प्रतापगढ़ चले गये और अनेक वर्षों तक वहीं रहे। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में उन्हें आत्मा के प्रकाश का अनुभव हुआ। 1938 में प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रूपाभ' का सम्पादन किया। श्री अरविन्द आश्रम की यात्रा से आध्यात्मिक चेतना का विकाश हुआ। 1950 से 1957 तक आकाशवाणी में परामर्शदाता रहे। 1958 में 'युगवाणी' से 'वाणी' काव्य संग्रह के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। 1961 में 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित हुये। 1968 में विशाल महाकाव्य 'लोकायतन' का प्रकाश हुआ। कालान्तर में उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। वह जीवन-पर्यन्त रचनारत रहे। अविवाहित पंत जी के अंतस्थल में नारी और प्रकृति के प्रति आजीवन सौन्दर्यपरक भावना रही। उनकी मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को हुई।

★ **निष्कर्ष :-** हिन्दी साहित्य के जाने माने साहित्यकार में सुमित्रानंदन पंत का नाम हमेशा प्रसिद्ध रहेगा। इस महान कवि और रचनाकार का योगदान हमारे साहित्य को एक अनमोल देन है। छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक सुमित्रानंदन पंत नए युग के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते है। और हमेशा ही जाने जाएंगे।

"उम्र थका नहीं सकती,
ठोकरें गिरा नहीं सकती।
अगर जिद्द हो जितने की,
तो हार भी हरा नहीं सकती।"